प्रेस विज्ञप्ति

18वां नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

2 फरवरी, 2008

'पिछले दशकों में हमारे देश ने जो कुछ प्रगति की है, चाहे वह संचार माध्यम हो, सूचना क्रांति हो या विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रगति, हर क्षेत्र में हम पुस्तकों के सहयोग से ही आगे बढ़े हैं।' पुस्तकों के प्रति ये उद्‌गार थे मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री अर्जुन सिंह के । माननीय मंत्री 18वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के उद्‌घाटन-अवसर पर स्वयं नहीं आ पाए अतः उनका संदेश मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव श्री के.एम.आचार्य द्वारा पढ़कर सुनाया गया।

प्रगति मैदान, नई दिल्ली के हंसध्वनि थियेटर में 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' के सुमधुर गान के साथ पुस्तक मेले का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर मंच पर भारतीय प्रकाशन जगत के दिग्गजों के साथ मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव श्री के. एम. आचार्य तथा रूस के प्रेस एवं जनसंचार विभाग के उप-प्रमुख आंद्रे रोमेंचेंको और सुप्रसिद्ध इतिहासविद् एवं नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्र उपस्थित थे।

ट्रस्ट की निदेशक श्रीमती नुज़्हत हसन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया, ''यह अब तक का सबसे बड़ी भागीदारी वाला मेला है।और जैसाकि सन् 2008 को 'भारत में रूस का वर्ष' घोषित किया गया है, हमारे मेले का सम्मानित अतिथि देश भी रूस है, जो भारत-रूस के सांस्कृतिक संबंधों को एक नया आयाम देगा।'' श्रीमती हसन ने बताया कि 'मेले में युवा एवं बाल मंडप के आयोजन के साथ-साथ गांधी द्वारा लिखी तथा गांधी पर लिखी पुस्तकों के विशेष प्रदर्शन का आयोजन भी किया गया है।'

जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च, बंगलुरू के प्रो.सी. एन.राव ने कहा कि मनुष्य की सृजनात्मकता का सबसे अधिक प्रभावी माध्यम पुस्तक ही है। उन्होंने भारत के वैज्ञानिकों में लेखन के अभाव पर खेद प्रकट किया और कहा कि भारत में विज्ञान लेखन पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।

रूस के प्रतिनिधि श्री आंद्रे रोमेंचेंको ने अपने वक्तव्य में बताया कि 'रूस में रामायण, महाभारत, ऋग्वेद और पंचतंत्र की कहानियों पर पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। वहां टैगोर और गांधी की पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं।' उन्होंने यह भी कहा कि गांधी जी स्वयं रूसी लेखक लेव टॉलस्टाय से बहुत प्रभावित थे।

प्रसिद्ध कन्नड़ लेखक, प्रो. यू.आर.अनंतमूर्ति ने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा, 'पुस्तक मेले को विचारों और आलोचनाओं का दंगल होना चाहिए, जहां पाठक बेझिझक पुस्तकों पर अपनी राय व्यक्त कर सकें। उन्होंने कहा कि सरकार को सभी भारतीय भाषाओं को एक समान अधिकार देना चाहिए। क्या पता किस आदिवासी भाषा में किसी महान साहित्यकार का जन्म हो जाए।'

ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्र ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मंच पर उपस्थित सभी विद्वतजनों, मीडिया कर्मियों तथा मेले में उपस्थित बच्चों का आभार प्रकट किया। उन्होंने यह भी बताया कि ट्रस्ट सभी भारतीय भाषाओं को मान्यता देते हुए 32 भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करता है जिसमें आदिवासी क्षेत्रों की भाषाएं भी शामिल हैं।

मेले के उद्घाटन से पूर्व विभिन्न स्कूलों और एन.जी.ओ. के लगभग 1000 बच्चों तथा नेहरू युवा केन्द्र के युवाओं द्वारा बाल मंडप से हंसध्वनि थियेटर तक एक 'पुस्तक मार्च' निकाला गया। ये बच्चे अपने नारे में पुस्तकें पढ़ने के संकल्प को दोहरा रहे थे।

मेले के विधिवत् उद्घाटन के पश्चात ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्र द्वारा रूसी मंडप का औपचारिक उद्घाटन भी किया गया।

ट्रस्ट की निदेशक, श्रीमती नुज़्हत हसन की अध्यक्षता में बाल मंडप में 15 वरिष्ठ बाल चित्रकारों के मौलिक चित्रों की प्रदर्शनी का प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट श्री आबिद सुरती द्वारा उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर पुलक विश्वास व जगदीश जोशी जैसे चित्रकार भी उपस्थित थे।

मेला देखने आए विशिष्ट लोगों में विपक्ष के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी तथा राज्यसभा के पूर्व सांसद डा. रत्नाकर पांडे भी थे।

नुज़्हत हसन